कहानी.....

– अंजना वर्मा

इंतज़ार डॉट कॉम

प्रिया को याद है जब उसने अपनी पहली नौकरी पकड़ी थी तो उसका मन पंछी की तरह उन्मुक्त आकाश में उड़ने लगा था। उसे लगने लगा था कि अब उसके पैरों में बहुत ताकत आ गई है और सचमुच अपना हर कदम वह इतने आत्मविश्वास के साथ रखने लगी थी कि उसकी चाल ही बदल गई थी। वह सोचने लगी थी कि अब समाज और परिवार में उसकी अपनी अलग पहचान होगी। वह कमाने वाली लड़की कहलाएगी । ऐसी लड़की को लोग लड़के से कम नहीं समझते– खासकर यथार्थवादी समाज में तो और भी। और कौन यथार्थवादी नहीं है ?कौन पैसे को बड़ा नहीं समझता?

अब वह बड़े शौक से कपड़े खरीदने और पहनने लगी थी ।ऑफिस जाने के पहले यह सोचती कि वह आज क्या पहन कर जाएगी ? इन कपड़ों के साथ कौन सी सैंडल ठीक रहेगी? सैंडल या स्नीकर्स? या चप्पलें ? उसके वार्डरोब में नए–नए कपड़े सलीके से टँगे अपनी बारी का इंतजार करते रहते थे। कमरे के बाहर जूतों के रैक पर नए चप्पल–जूतों की कई जोड़ियाँ सज गई थीं। ऑफिस के लिए निकलती तो चेहरा दमकता रहता। दिल्ली से जब वह अपने घर जाती तो मम्मी पापा के लिए भी कपड़ों से लेकर खाने–पीने ,दवा और कई जरूरत की चीजों की अच्छी–खासी शॉपिंग कर लेती। वहाँ पहुँचकर अपना पिटारा खोलती। माता–पिता को खुशियाँ देकर वह स्वयं खुशियों से भर जाती थी ।

इधर दिल्ली से दूर दूसरे शहर में रह रहे उसके माता– पिता उसके लिए लड़का ढूँढने में परेशान थे ।जहाँ जाते वहाँ बात सबसे पहले दहेज में दी जाने वाली चीजों और एकमुश्त रुपयों की फेहरिस्त से शुरू होती और वहीं रुक जाती ; क्योंकि दहेज दे पाना उनके लिए संभव नहीं था। लड़की दिखाने की नौबत ही न आती । नौकरी मिलने के बाद प्रिया बेफिक्र हो चली थी कि अब तो हर कोई उसे बहू बनाना चाहेगा। आजकल जिसे देखो वही नौकरीपेशा बहू ढूँढ रहा है ।इसी तरह कुछ साल कैसे बीत गए पता भी न चला। अभी तक उसकी शादी तय नहीं हो पाई थी। इंटरनेट के वैवाहिक विज्ञापन में भी उसका नाम था । जॉब वाली लड़की को वैवाहिक विज्ञापन में देखकर लोग आकर्षित तो जरूर होते थे, बातचीत आगे बढ़ाते भी थे। लेकिन नौकरी के बदले भारतीय समाज में कन्याओं के लिए निर्धारित रूप और अपेक्षाओं के मानक में थोड़ी कमी करने के लिए तैयार नहीं होते थे। अब वह इकतीस से ऊपर की हो चली थी। जो मन गैस के गुब्बारे की तरह फूलकर आकाश में उड़ गया था , वह अब उम्मीदों की हवा खोकर जमीन पर उतरने लगा था ।

अंजना वर्मा : कवि और कहानीकार। ई 102 रोहण इच्छा अपार्टमेंट, भोगनहल्ली, विद्या मंदिर स्कूल के पास, बेंगलुरु-560103.
Mob. No.: 8210777500, G-Mail: anjanaverma03@gmail.com

नाउम्मीदी शाम के धुँधलके की तरह घेरने लगी थी ।जैसे–जैसे लड़के वालों से बातें टूटतीं, माँ की आँखों का काला घेरा थोड़ा और बड़ा हो जाता।

इंटरनेट पर अपनी शादी का विज्ञापन उसने स्वयं तैयार किया था । उसने जब पहली बार अपना नाम मैट्रिमोनियल पर डाला था तो अपने अकेलेपन में भी वह शरमा गई थी ।उसने लैपटॉप पर टाइप किया था अपना नाम, कद, रंग ,वजन ,शिक्षा, नौकरी ,सामिष या निरामिष वगैरह–वगैरह। फिर जब वह पार्टनर प्रेफरेंस वाले कॉलम में टाइप करने लगी थी तो कई रूमानी बातें पार्श्व संगीत की तरह बजने लगी थीं उसके कानों में। सारे कॉलम उसने पूरे करके मेट्रोमोनियल्स में भेज दिए थे और उसके बाद से शुरू हो गई थी जीवनसाथी की खोज ।अब उसका काम रह गया था ऑफिस से आकर लैपटॉप खोलकर देखना कि किसीका जवाब आया कि नहीं । यदि जवाब आया तो वह लड़का कैसा है? उसके लिए सही रहेगा या नहीं? देखने और सोचने का काम तो उसीका था ।अच्छा लगता तो वह माँ को बता देती और फोन नंबर दे देती। फिर उसके माता–पिता बात को आगे बढ़ाते । शादी की बात कितना आगे जाएगी और किस बिंदु पर जाकर टूट जाएगी , यह नहीं समझा जा सकता था। इधर ऐसा हो रहा था कि बात शुरू होती थी और खत्म हो जाती थी उसके साँवले चेहरे पर जाकर। जब ऐसा होता तो माता–पिता और बेटी ,सबकी अभिलाषाएँ मर जातीं। कुछ दिनों बाद फिर आशाएँ उसी तरह जन्म लेतीं जैसे नम धरती पर हरे–हरे अंकुर बिना बोये उग आते हैं ।पर उनका भी हश्र वही होता ।लगता कि कोई इन अंकुरों को नष्ट करने के लिए तैयार बैठा है और जंगल–झाड़ की तरह शादी की हर बातचीत को बेरहमी से साफ करता चला जा रहा है।

उसने अपने कॉम्प्लेक्शन में तो लिख दिया था फेयर। पर यह वह अच्छी तरह जानती थी कि उसके चेहरे का रंग फेयर नहीं, साँवला था जिसे कोई काली भी कह सकता था। हर सच्ची बात बोली नहीं जा सकती। कभी–कभी झूठ से भी काम बन जाता है। जब उसने अपने बारे में लिखा फेयर तो उसकी अंतरात्मा ने कहा कि वह झूठ लिख रही है। मन के दूसरे हिस्से ने कहा कि पुराने जमाने की तरह बिना लड़की देखे तो शादी होगी नहीं? अगर उसे लड़के वाले नहीं पसंद करेंगे तो जाएंगे अपने रास्ते। यह दलील हमेशा उसके झूठ का रक्षा–कवच बन जाती।

और तो कोई बुराई नहीं थी उसके चेहरे में। बड़ी–बड़ी आँखें ,चढ़ी हुई भँवे जो थ्रेडिंग कराने के बाद कमान की तरह हो जातीं। पतले और लंबे हाथ–पैर और बार्बी डॉल की तरह लंबी देहयष्टि । जींस पहन लेती और ऊँची हील तो पतली कमर बाँस की कमाची की तरह लप–लप करके हर उठते हुए कदम के साथ लचकने लगती थी। शिव की प्रिया पार्वती साँवली थीं और द्रौपदी भी ।पर आज इस इक्कीसवीं सदी में कोई लड़की साँवली हो गई तो सुंदरता के अन्य मानदंडों पर खरी उतरकर, शिक्षा और नौकरी के क्षेत्र में आगे होकर भी अभिशप्त क्यों हो जाती है?

जब से वह नौकरी करने लगी थी तब से कई जगह रिश्ते की बात चली। पर लड़के वाले प्रिया को देखने के बाद चुप हो गए। एक जान–पहचान के थे जिनका लड़का सुयोग्य था ।पर एक समारोह में जब लड़की की माँ से प्रिया की माँ ने बात शुरू करनी चाही तो वह पहले ही कन्नी कटा गईं," अरे, सौरभ तो अभी शादी करना ही नहीं चाहता। कहता है अभी मुझे स्वतंत्र छोड़ दो।"

प्रिया की माँ को बात समझते देर न लगी कि लड़के की माँ प्रिया को बचपन से देख रही थीं। रूप और गुण पसंद आए होंगे तो भी रंग को स्वीकार करना मुश्किल था।

प्रिया रोज–रोज इस नाटक से ऊब चुकी थी ।वह चाहती थी कि शादी ही न करे। ऐसा संकल्प मन में लाते ही माँ का निरीह चेहरा उसकी आँखों के सामने आ जाता ।वह हार जाती और इन अपमानजनक नाटकीय दृश्यों में नायिका की भूमिका अदा करने के लिए खुशी–खुशी तैयार हो जाती । पिता अक्सर अस्वस्थ रहते थे। अब प्रिया की शादी को लेकर वे पूरी तरह निराश होकर इस परिदृश्य से अलग–थलग रहने लगे थे। वे जानते थे कि इस नाटक का अंत क्या होगा ? इधर जब प्रिया को दिखाने की बात उठती तो साथ में माँ होती और परिवार का कोई एक और सदस्य। देखने–दिखाने का सिलसिला चलता रहता था। प्रिया के लिए भी यह कोई नई बात नहीं रह गई थी ।अब सारी बातें उसके दिल को बिना छुए ऊपर से निकल जातीं और उसका रोज ऑफिस आना–जाना जारी रहता।

इसी तरह एक लड़के वाले से जो बात चली तो कुछ ज्यादा ही आगे बढ़ गई। उन्हें अपने बेटे की शादी की बड़ी जल्दी थी। विवाह पहले ही लगन में तय कर देना था। प्रिया की माँ के लिए दिल्ली जाना मुश्किल था, क्योंकि उसके पिता बीमार चल रहे थे और किसी तरह जाती भी तो हाँ की कोई आशा नहीं थी। लड़के वाले लड़की दिखाने के लिए जोर डाल रहे थे। असमंजस में पड़ी माँ ने प्रिया से फोन पर पूछा," प्रिया! लड़के वाले लड़की देखने के लिए कह रहे हैं। क्या करूँ? कैसे आऊँ ? तुम्हारे पापा बीमार हैं। ठीक रहते तो भी अब इन सबके लिए जाते नहीं। पूरी तरह नाउम्मीद हो चुके हैं वे। यह तो तू जानती ही है?"

कुछ देर ठहरने के बाद बोलीं, "तो क्या करेगी....?"

इसके आगे फिर मौन था। कोई बात उनके कंठ में इस तरह छुपी हुई थी कि बाहर निकलने में सकुचा रही थी जैसे नंगी हो। प्रिया ने बिना सुने–देखे उसे जान–समझ लिया था। बात को पर्दा ओढ़ाकर उसने माँ के डूबते हुए दिल को बचा लिया था। बोली, "माँ! अब तुम कितना आओगी –जाओगी? आओगी भी तो हाँ हो ही जाए क्या जरूरी है ? तुम चिंता मत करो। मैं किसी सहेली के साथ चली जाऊंगी या ऑफिस के किसी दोस्त को कज़िन बनाकर ले जाऊंगी।"

यह सुनकर उसकी माँ चहक उठी, " हाँ? .... ऐसा कर लेगी तू? ठीक है, इस बार ऐसा ही कर ले। क्या पता? इस बार भगवान मेरी प्रार्थना सुन लें? ठीक है, तो मैं लड़के वाले को एक तारीख दे देती हूँ कि वे जाकर तुझे देख लें। तारीख तू ही मुझे बता दे।"

इस पर प्रिया बिदक गई। बोली, "क्या माँ, अब तुम भगवान की बात उठा लाई बीच में। इतने दिनों से तो मेरी शादी के लिए व्रत रख रही हो। क्यों नहीं सुनता तुम्हारा भगवान ? क्यों नहीं बना देता मुझे गोरी कि लड़के वाले देखते ही हाँ कर दें?"

ऐसा कहकर प्रिया ने गुस्से से अपना मोबाइल बंद कर दिया। माँ ने उसे मनाने के लिए कई बार कॉल किया। कई बार मोबाइल की घंटी को उसने अनसुना किया। तब माँ को असहाय जान कर रिसीव किया प्रिया ने और कहा," ठीक है। अब तुम सब मुझ पर छोड़ दो ।मैं सब मैनेज कर लूंगी।"

उस बार प्रिया को कोई ऐसा हमराज नहीं मिला जो उसके साथ जाता और बात को गोपनीय रखता। वह स्वयं भी किसी के सामने यह प्रदर्शन नहीं करना चाहती थी। यह खबर पूरे ऑफिस में फैल जाएगी। अगर हाँ हुई तो भी बार–बार पूछेंगे कि बात कहाँ तक पहुँची? और अगर ना हुई तो वह एक सनसनीखेज़ खबर बनकर कितने दिनों तक सुर्खियों में रहेगी। अतः उसने तय किया कि वह अकेली ही जाएगी।

निश्चित तिथि को जिस रेस्टोरेंट में मिलने की बात हुई थी वहाँ वह सकुचाते हुए धड़कते दिल से पहुँची। लड़के वाले टेबल पर पहले से ही मौजूद थे। उनकी ओर से सबसे पहले यह पूछा गया कि वह अकेली क्यों आई? क्या कोई साथ आने वाला नहीं था ?उसने बहाना बना दिया कि साथ में कज़िन आने वाला था, लेकिन अचानक उसे इंटरव्यू के लिए जाना पड़ा। इसीलिए साथ नहीं आ सका। फिर तरह–तरह के कई सवाल ! वह वहाँ कितनी देर तक अपने सामने बैठे लड़के ,

अगल– बगल बैठे उसके माता पिता और बहन की पैनी नजरों के नश्तर झेलती रही।

किसी–किसी तरह इन चुभते हुए पलों को झेलकर वह रेस्टोरेंट्स से बाहर निकली।फिर एक थ्री व्हीलर पकड़ी और चल दी। उसका मन रोने का कर रहा था। लगता था कि किसीने उसे खूब झिड़कियाँ सुनाई हैं। हुआ वही जिसका डर था। लड़के वालों ने फोन पर जवाब दिया," हमें इतनी स्मार्ट लड़की नहीं चाहिए जो हर काम खुद ही कर ले। ऐसी लड़की घर में कैसे रहेगी?"

यह जवाब सुनकर प्रिया की माँ गहन सोच में डूब गई थीं और पिता भी। प्रिया को मालूम हो ही गया था। लड़के वालों का जवाब। उसे याद आता कि बचपन में वह इन रिवाजों का कितना विरोध करती थी? लेकिन आज स्वयं उसे इन

रिवाजों के हाथों का मोहरा बनना पड़ रहा है। अब बात दहेज तक ही सीमित नहीं है। लड़की सुंदर हो अभिनेत्री की तरह, फीगर हो मॉडल की तरह, कमाए मर्दों की तरह, अंग्रेजी बोले अंग्रेज की तरह। इतने गुण शादी के लिए लड़की में होने चाहिए। अंग्रेजी बोल सकती है या नहीं, यह जानने के लिए लड़के वाले उससे अंग्रेजी में बात करेंगे। वह लंबी है कि नहीं यह देखने के लिए लड़की की माँ या बहन उसके साथ–साथ बगल में चलने लगेगी या यह देखने की कोशिश करेगी कि लड़की ने कितनी हील पहन रखी है ? लड़कों को ऐसे प्रदर्शनों से क्यों नहीं गुजरना पड़ता ? काम करते हुए या रास्ते पर चलते हुए ऐसे प्रश्न उसके दिमाग में उठते रहते। इंटरनेट होने से लड़कियों की परीक्षा और कठिन हो गई है। मनुष्य विज्ञान के क्षेत्र में तरक्की कर रहा है, पर इससे वह अपने स्वार्थ को ही पुष्ट कर रहा है। अब लड़की की फोटो इंटरनेट पर रहती है। उसे देखने के बाद ही विवाह की बात शुरू होती है।तब भी लड़कियाँ छँटती हैं। वह कैसे विद्रोह करे ? इतना पढ़–लिखकर, नौकरी करके लड़कों के बराबर हो जाने का सुख केवल एक भ्रम था। वह महसूस करने लगी थी कि लड़कियाँ लड़कियाँ ही होती हैं। इस आधुनिक समाज में भी ऐसे क्षण आते हैं जब ऊँचे उठे सिर को झुकाकर परंपरा की सुरंग में प्रवेश करना ही पड़ता है।

इस बार भी यह देखना–दिखाना जीवन में रोजमर्रा के घटनाक्रमों का एक हिस्सा बनकर गुजर गया अपनी एक बदसूरत और दुखद छाप छोड़ते हुए। शादी की बातों से प्रिया को इतनी चिढ़ हो चली कि उसने इस विषय में सोचना और कुछ करना छोड़ दिया; पर व्यवहारिकता और ढलती हुई उम्र उसे चेताने में पीछे नहीं रहती थी।

उस दिन वह ऑफिस से आई तो बहुत थकी हुई थी। चाह रही थी कि बिछावन पर लुढ़क जाए। किसी तरह के तनाव–भरे काम में अभी उलझना नहीं चाहती थी। पहले तो उसने फ्रिज खोलकर ठंडा पानी पीया। फिर एक कप चाय बनाकर लाई और लैपटॉप खोलकर मेल चेक करने लगी। इनबॉक्स में उसने देखा कि दो जगहों से शादी की बात आगे बढ़ाने की स्वीकृति आई थी। एक लड़का तो उसे बिल्कुल ही पसंद नहीं आया। नौकरी भी ठीक नहीं थी। दूसरा अच्छा था देखने में ! स्मार्ट और बहुराष्ट्रीय कंपनी में नौकरी ! प्रिया का मन न चाहते हुए भी बेले की तरह खिल गया। वह खुशबू के ताल की राजहंसिनी बन गई ।कहाँ चली गई थी छाँट दिये जाने की उदासी? उसने अपनी स्वीकृति मेल के द्वारा भेज दी और लड़के वाले का फोन नंबर माँ को दे दिया। दोनों ओर से आपस में बातें होने लगीं। लड़की दिखाने की तारीख तय कर दी गई।

लड़के वाले फ्लाइट से पहुँच रहे थे उसे देखने के लिए। इस बार दिल में बहुत सारी उम्मीदें लेकर प्रिया की माँ दिल्ली आने के लिए ट्रेन में सवार हुई। रास्ते–भर मीठे सपने देखती आई। तरह–तरह के शुभ शगुन उन्हें दिखाई पड़े। मन में विश्वास हो आया कि इस बार तो शादी तय हो ही जाएगी। शादी खूब अच्छी तरह करेंगी। प्रिया अपनी शादी की शॉपिंग अपनी पसंद से दिल्ली से ही कर लेगी। इस बार शायद लौटकर एक सुखद समाचार प्रिया के पिता को सुना सकें ! प्रिया का एक चचेरा भाई विनीत था जो आ गया था और उनके काम में सहयोग कर रहा था।

लड़का लड़की एक दूसरे को दिल्ली के एक प्रसिद्ध मॉल में देखने वाले थे। प्रिया की माँ, उसका भाई विनीत और प्रिया सभी मॉल में बैठे लड़के वालों का इंतजार कर रहे थे। प्रिया को लग रहा था आज कोई राजकुमार आने वाला है जो उसके हाथों को अपने हाथों में लेकर चूम लेगा। वह अपनी मुस्कुराहट को छुपाने की कोशिश कर रही थी। विनीत मॉल के गेट पर खड़ा था। उसकी आँखें इधर–उधर ढूँढ रही थीं। ऐसे लोग भीड़ में भी अलग दिखेंगे जिनकी आँखों में किसीको खोजने की बेचैनी होगी। इसीसे वह आश्वस्त था कि लड़के वालों को जरूर पहचान लेगा। तभी उसने देखा कि तीन जन भीतर चले आ रहे थे जिन्हें देखने से ही लग रहा था कि वह एक समृद्ध परिवार था – माता पिता और उनका जवान बेटा। विनीत लपककर गया। कुछ हिचकिचाते हुए बोला, "आर यू मिस्टर सिन्हा?"

"येस–येस..।"पुरुष ने तपाक से जवाब दिया।

विनीत ने झुककर उस दंपति के पैर छुए और उनकी अगवानी करता हुआ उन्हें वहाँ लेकर आया जहाँ प्रिया और उसकी माँ सोफे पर बैठी हुई थीं। बगल में कॉफी स्टॉल था। एक संक्षिप्त नमस्कार के बाद वे तीनों वहीं सोफा पर बैठ गए। प्रिया ने उठकर उन दोनों के पैर छुए और उसके बाद अपनी माँ की बगल में बैठ गई कुछ लजाती हुई –सी।

लड़की की माँ ने एक बार गौर से प्रिया को देखा – आकर्षक थी यह लड़की ! सुंदर भी कही जा सकती थी। पर रंग? उसने अपनी आँखें फेर लीं और लड़की की माँ से बात करने लगी। दोनों के बीच औपचारिक बातें होने लगीं। उधर लड़का विनीत से बातें कर रहा था। उसके पिता भी विनीत से बातें करते–करते बीच–बीच में लड़की की ओर देख ले रहे थे।

कुछ समय बीत जाने पर प्रिया की माँ ने कहा," अगर आप लोगों को कोई आपत्ति न हो तो लड़का लड़की एक दूसरे से बातें करें?"

मिस्टर सिन्हा ने कहा,"नहीं–नहीं, हमें आपत्ति क्या होगी ? इसीलिए तो आए हैं हम।"

प्रिया ने आज पहन रखी थी ब्लू जींस और उस पर मरून कुर्ता। हाई हील की सैंडल। कटे हुए बाल कंधे तक झूल रहे थे।वह बेझिझक उठी और बगल में रखे गोल मेज पर जाकर बैठ गई। तब लड़का भी उठा। लंबी कद–काठी, गेहुँआ रंग , चेहरे पर रौनक । वह भी उठकर प्रिया के पास बैठ गया और दोनों बातें करने लगे । लड़के के आफ्टर शेव की महक प्रिया को सम्मोहित कर रही थी। न जाने क्यों वह उस अपरिचित लड़के से मुस्कुरा– मुस्कुराकर बातें कर रही थी जैसे वह उसे वर्षों से जानती हो या वह उसका सहपाठी रह चुका हो। अपरिचय जैसा कुछ भी नहीं था उन दोनों के बीच। आज यहाँ की हर चीज नयी लग रही थी। हालांकि वह कई बार इसके पहले भी इस मॉल में आ चुकी थी और यहीं बैठ कर उसने कॉफी भी पी थी । लेकिन कभी इस कॉफी शॉप के वातावरण ने उसे इस तरह नहीं बाँधा था। आज लगता था कोई शादी का समारोह है और अगल–बगल बैठे लोग जैसे आमंत्रित अतिथि। उम्दा कॉफी की नशीली

खुशबू चारों ओर फैली हुई थी जो साँसों में समाती जा रही थी। यह कॉफी की खुशबू थी या किसी शादी के पंडाल की हवा में घुली गेंदे और रजनीगंधा की महक? वहाँ की खामोशी शहनाई की गूँज बनकर उसके कानों में रस की तरह समाती जा रही थी। वह महसूस कर रही थी कि उसके अंग–अंग की सारी कोशिकाएँ बेहद संवेदनशील हो उठी थीं इन पलों के एहसास को पी जाने के लिए ! अभी फिर बेले की खुशबू चारों ओर फैल गई थी एक झील बनकर। वह जलपरी बनी उसमें तैर रही थी और उसके साथ था उसका राजकुमार !

मिसेज सिन्हा प्रिया की माँ से बातें करते–करते नजरें बचाकर लड़की को देख लेतीं। सब तो ठीक है। चेहरा ठीक है, पढ़ाई–लिखाई, संस्कार, जॉब, सबकुछ ठीक, पर.....। इन लोगों ने कॉम्प्लेक्शन फेयर क्यों लिख दिया था? यह लड़की फेयर नहीं कही जाएगी। विनीत उठकर गया और सभी के लिए कॉफी लेकर आया। कॉफी पीने के बाद मिसेज़ सिन्हा को लगा कि अब चलना चाहिए। व्यर्थ समय गँवाना ठीक नहीं। उन्होंने अपने पति से कहा, "तो अब चलें हम?"

मिस्टर सिन्हा उठ खड़े हुए बोलते हुए, "हाँ।"

एसी मॉल में बैठी हुई प्रिया की माँ के माथे पर पसीने की बूँदें छलक आईं। हाथ जोड़कर नमस्ते करते हुए वह बोलीं, "तब आपने कुछ कहा नहीं?"

मिसेज़ सिन्हा ने कहा, " एक हफ्ते का समय दीजिए हमें। हम फोन से खबर कर देंगे।"

लड़का भी उठ खड़ा हुआ था। प्रिया भी। दोनों ने एक दूसरे को बाय कहा । लड़का अपने माता– पिता के साथ चलने लगा । प्रिया अपनी माँ की बगल में चल रही थी।

मिसेज़ सिन्हा ने कुछ यूँ ही बातें कर लीं प्रिया से। पूछा,"तब, तुम्हारी मम्मी आज लौट जाएंगी?"

बहुत स्वाभाविक होकर प्रिया ने कहा, " हाँ आंटी!"

"तो तुम उन्हें सी ऑफ करने जाओगी स्टेशन?"

"नहीं, विनीत भैया है ना ? वही जाएंगे।"वह बोली।

उस बड़े मॉल का निकास आ गया था। प्रिया ने मुस्कुराकर मिस्टर एवं मिसेज सिन्हा के पैर छू लिए । प्रिया की माँ ने नमस्ते की जिसके बाद दोनों टोलियाँ विपरीत दिशाओं में चली गईं।

इस देखा–देखी के बाद प्रिया का एक सप्ताह बड़ी बेचैनी के साथ कटा। पता नहीं क्यों उसे लगने लगा था कि अब न टूटने वाली चुप्पी का दौर शुरू हो गया है ।एक सप्ताह पूरा होते ही प्रिया के पिता ने लड़के वाले का नंबर मिलाया।

मिसेज सिन्हा ने कॉल रिसीव किया और सपाट स्वर में कहा, "अभी हम कुछ निर्णय नहीं ले पाए हैं। थोड़ा समय और दीजिए।"

पंद्रह दिन फिर बीते। प्रिया की माँ ने इस बार सशंकित होकर फोन किया तो किसी ने उठाया ही नहीं ।मोबाइल को कान से लगाए सुनती रहीं, " जिससे आप संपर्क करना चाहते हैं वह जवाब नहीं दे रहा । कृपया दोबारा कोशिश करें।"

उन्होंने कई बार फोन किया। मोबाइल में रिंगटोन सुनाई देता और थोड़ी देर बाद आवाज आती "जिससे आप संपर्क करना चाहते हैं....।"

एक महीना बीत गया । इस बीच कितनी बार उन्होंने प्रिया से पूछा," उन लोगों की ओर से ईमेल पर कोई जवाब आया क्या?"

प्रिया खीझकर बोलती," नहीं।"

तब उन्होंने पूछना छोड़ दिया । पर निराशा के समुद्र में डूबते हुए उन्होंने जैसे अपनी जीवन रक्षा के लिए अंतिम बार हाथ–पैर मारा। प्रिया को कहा कि वह अपने पापा की ओर से लड़के वालों को ईमेल करके पूछे। प्रिया भी शायद यही चाह रही थी मन में। उसने ईमेल कर दिया । विनीत को कहकर उसने उन्हें एक एसएमएस भी करवा दिया । पर दिन बीतते गए ।कहीं कोई दस्तक नहीं हुई । तो भी प्रिया रोज मेल चेक करती ।क्या पता बेले की खुशबू फैलती हुई पहुँच जाए उस तक?

****